परिशिष्ट

हिन्दी और भारत की प्रादेशिक भाषाएँ

आर्यों से पहले भारत में चार जातियाँ आ चुकी थीं—(१) नेग्रिटो (२) आस्ट्रिक (३) किरात (४) द्रविड़। इन चारों जातियों की भाषाओं के शब्द आर्य-भाषा में भी समाविष्ट हुए। पारस्परिक संपर्क-संसर्ग से संस्कृति के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ। कालान्तर में इस सांस्कृतिक विकास ने शनैः शनैः अनेक भारतीय भाषाओं को जन्म दिया। आज भारत में जितनी भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, वे चार भाषा-परिवारों से ही सम्बद्ध हैं। उनके नाम ये हैं—(१) तिब्बती-चीनी परिवार (२) आस्ट्रिक परिवार (३) द्रविड़ परिवार (४) भारोपीय परिवार।

गारो, मेएथेइ, मिश्मी और अक्कदी भाषाएँ तिब्बती-चीनी परिवार की हैं। नीकोबारी, मोन्ख्मेर, मुंडा और संथाली भाषाएँ आस्ट्रिक परिवार से सम्बद्ध हैं। तमिळ, तेलुगु, कन्नड़ और मलयाळम द्रविड़ परिवार की भाषाएँ हैं। भारोपीय परिवार से सम्बद्ध निम्नांकित भारतीय भाषाएँ महत्त्वपूर्ण हैं—(१) हिन्दी (२) असामी (३) बंगला (४) उड़िया (५) मराठी (६) गुजराती (७) सिंधी (८) पंजाबी (९) कश्मीरी।

संपूर्ण भारतवर्ष में भारतीय प्रादेशिक भाषाओं में से दो ही परिवारों की भाषाएँ प्रमुख रूप से अपने अस्तित्व और महत्त्व को स्थापित किये हुए हैं—(१) भारोपीय परिवार (२) द्रविड़ परिवार। इन दोनों परिवारों की भाषाएँ लोक-जीवन के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी आसन जमाये हुए हैं। इन भाषाओं में साहित्य भी उच्च कोटि का पाया जाता है। भारोपीय परिवार की भाषाओं में बंगला, गुजराती, मराठी और पंजाबी का साहित्य पर्याप्त उत्कर्ष प्राप्त कर चुका है। द्रविड़ परिवार की भाषाओं में तमिळ, तेलुगु, कन्नड़ और मलयाळम सहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं से शब्द-सम्पत्ति लेकर हिन्दी ने जो विकास और समृद्धि प्राप्त की है, उस में हिन्दीतर आर्यभाषाओं और द्रविड़ भाषाओं का भी पर्याप्त योगदान है। हिन्दी ने भी उन्हें

Scanned with CamScanner

बहुत कुछ दिया है। यह आदान-प्रदान ही भारतीय प्रादेशिक भाषाओं तथा हिन्दी को सम्पन्न एवं समृद्ध बनाएगा और भूत में बना भी चुका है।

शब्द और व्याकरणिक संरचना के धरातल पर हिन्दी और भारतीय अधिभाषाओं में क्या साम्य और वैषम्य है, यही हमारा विवेच्य विषय है।

भाषाशास्त्रीय विश्लेषण के लिए भारतीय अधिभाषाओं में से हम यहाँ कुछ भाषाओं को ही ले रहे हैं। आर्य-परिवार की भाषाओं में बँगला, गुजराती, मराठी, और पंजाबी ग्रहणीय हैं। द्रविड़-परिवार में तमिळ, तेलुगु, कन्नड़ और मलायळम हमारे लिए विवेच्य हैं। संस्कृत की शब्द-संपत्ति जिस तरह हिन्दी को मिली है, उसी तरह उपर्युक्त आठ भाषाओं को भी प्राप्त हुई है। इसी नाते ये आठों भारतीय प्रादेशिक भाषाएँ हिन्दी से सहोदरा के रूप में सम्बद्ध हैं। अतः हिन्दी का विकास इन उक्त आठों भाषाओं का विकास है और इन आठों भाषाओं का विकास हिन्दी का विकास है।

हिन्दी और भारतीय अधिभाषाएँ

(क) हिन्दी और बँगला

हिन्दी और बँगला की ध्वनियाँ—

मूल ध्वनियों का सार्थ समन्वय सार्थक शब्दों को जन्म देता है। शब्द की मूल ध्वनियों के उच्चारण में देश-काल एवं सांस्कृतिक परम्परा का प्रभाव पाया जाता है। इसीलिए एक ही शब्द उच्चारण की दृष्टि से विभिन्न भाषाओं में विभिन्न रूप में बोला जाता है। संस्कृत का 'शुष्क' शब्द मागधी भाषा में 'शुश्क' बोला जाता था। इसी उच्चारण-परम्परा में संस्कृत के 'इष्यति' क्रियापद को मागधी में 'इश्शदि' बोलते थे। 'वह' के अर्थ में संस्कृत का 'सः' सर्वनाम मागधी में 'शे' के रूप में बोला जाता था। सारांश यह है कि संस्कृत की 'ष्' और 'स्' ध्वनियाँ मागधी में 'श्' के रूप में बोली जाती थीं। मागधी की विकसित परम्परा में जन्म लेनेवाली बँगला भाषा में भी आज उच्चारण की स्थिति वैसी ही पायी जाती है। हिन्दी का 'सामने' बँगला में 'शाम्ने' और हिन्दी का 'संग' बँगला में 'शॉङ्.ग' बोला जाता है। सारांश यह कि श्, ष् और स् ध्वनियों के स्थान पर बँगला में 'श्' (तालव्य श्) ही बोला जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने पर इसका कारण मागधी अपभ्रंश की उच्चारण-परम्परा को ही माना जा सकता है।

अन्य ध्वनियों का विवरण इस प्रकार है—(१) शब्द के आदि, मध्य या

अन्त में आनेवाला 'अ' बँगला में 'ऑ'[1] उच्चरित होता है जैसे—

हिन्दी में	बँगला में
अवतार्	ऑबतार्
मध्ये	मॉद्धे
कर्तव्य	कॉर्तॉब्बॉ

(२) शब्द के मध्य में 'अ' हो और उस 'अ' के पश्चात् आने वाला स्वर 'इ' या 'उ' हो तो उस 'अ' का उच्चारण 'ओ' होता है। जैसे—

हिन्दी में	बँगला में
घड़ी	घोड़ि
छड़ी	छोड़ि

(३) शब्द के अन्त में आने वाला 'अ' हिन्दी की भाँति बँगला में भी अनुच्चरित रहता है। जैसे—

हिन्दी में	बँगला में
जय्	जॉय्
जल्	जॉल्

(४) शब्द के आदि की 'ए' ध्वनि बँगला में 'अ्यै'[2] (एँ) बोली जाती है। जैसे—

हिंदी में	बँगला में
एवं	अ्यैबॉङ (एँबॉङ्)
एक	अ्यैक (एँक्)

(५) संधि स्वर 'ऐ' (अइ) का उच्चारण बँगला में ओइ होता है—

हिन्दी में	बँगला में
पइसा	पोइशा

(६) 'य्' ध्वनि का उच्चारण बँगला में प्रायः 'ज्' होता है—

हिन्दी में	बँगला में
यतिवर्	जोतिबर्
यज्ञ्य	जॉग्ग्यॉ

(७) बँगला में 'व्' लिखा तो जाता है, किन्तु उसका उच्चारण 'ब्' किया

1. बँगला में यह गोलाकार ओष्ठ्य, पश्च, अर्धविवृत ह्रस्व स्वर है। हिन्दी में दीर्घ है।

2. यह अर्धविवृत अग्रमूल ध्वनि है। हिन्दी के 'ऐसा' में यही है।

जाता है। जैसे—

हिन्दी में	बँगला में
वरुण	बोरुणाँ
वरम्	बॉरम्

(८) श्, ष्, स् का उच्चारण बँगला में प्रायः 'श्' ही होता है जैसा कि पहले कहा जा चुका है।

हिन्दी में	बँगला में
सब्	शॉब्

(९) 'क्ष्' (क्+ष् का गुच्छ) का उच्चारण बँगला में प्रायः 'क्ख' होता है—

हिन्दी में	बँगला में
लक्ष	लॉक्खाँ
भक्ष	भॉक्खाँ

(१०) व्यंजन-गुच्छ अथवा व्यंजन-संयोग की प्रथम ध्वनि बँगला में प्रायः द्वित्व-रूप ग्रहण कर लेती है। जैसे—

हिन्दी में	बँगला में
विश्व (विश्श्व)	बिश्शाँ
पद्म	पॉद्दाँ

'विश्व' बँगला का लिखित रूप है और 'बिश्शाँ' उच्चरित रूप है। आज की भाषाशास्त्रीय शब्दावली में हम यों भी कह सकते हैं कि 'विश्व' ध्वनिग्रामीय प्रतिलेखन है और 'बिश्शाँ' ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन है। हिन्दी में भी ऐसी स्थिति पाई जाती है। जैसे—

हिन्दी में ध्वनिग्रामीय प्रतिलेखन		हिन्दी में ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन	
(१) विद्वान्	(२) सत्र	(१) विद्द्वान्[1]	(२) सत्त्र

हिन्दी और बँगला के शब्द और उनके अर्थ—

भाषाओं में शब्द तो दूसरी भाषाओं से ग्रहण कर लिये जाते हैं, किन्तु उस निर्दिष्ट भाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के प्रभाव से उन शब्दों का

१. पाणिनीय शिक्षा में गुच्छ की पूर्ववर्ती ध्वनि के द्विपक्षी गमन पर विचार किया गया है। 'अग्नि' का उच्चारण 'अग्ग्नि' बताया है।

— (पा० शिक्षा १।४)

आभ्यन्तर रूप (=अर्थ) बदल जाया करता है। अनेक शब्द हिन्दी और बँगला ने संस्कृत आदि से लिये हैं, किन्तु अपने-अपने सामाजिक वातावरण के कारण उनके अर्थ हिन्दी और बँगला में भिन्न-भिन्न हैं। जैसे—

हिन्दी में शब्द-अर्थ	बँगला में शब्द-अर्थ
बाड़ी=बगीचा	बाड़ी=घर
घर=मकान	घर=कमरा
आदर=सम्मान	आदर=स्नेह
राग=प्रेम	राग=क्रोध
संभ्रान्त=भ्रमपूर्ण	संभ्रान्त=कुलीन

शब्द का क्षेत्र और गति तो हजारों कोसों से भी अधिक होती है; किन्तु किसी भाषा की व्याकरणिक संरचना की गति सीमित ही होती है। व्याकरणिक संरचना का भेद ही एक भाषा से दूसरी भाषा का अन्तर स्थापित किया करता है। 'घोड़ा' शब्द तो बँगला और हिन्दी—दोनों में ही प्रचलित है; किन्तु हिन्दी में 'घोड़ा' का ऋजुरूप बहुवचन 'घोड़े' और बंगला में 'घोड़ारा' है। बस-ए और-रा ही भेदक तत्त्व हैं।

हिन्दी और बँगला की व्याकरणिक संरचना—

(१) लिंग-विधान—

हिन्दी और बँगला का लिंग-विधान बहुत-कुछ मिलता-जुलता-सा है—

हिन्दी			बँगला		
पुं०	स्त्री०	प्रत्यय	पुं०	स्त्री०	प्रत्यय
देव	देवी	-ई	देब	देब	-ई
बाघ	बाघिनी	-इनी	बाघ	बाघिनी	-इनी
नौकर	नौकरानी	-आनी	चाकर	चाकरानी	-आनी
घोड़ा	घोड़ी	-ई	घोड़ा	घोड़ी	-ई

हिन्दी-बँगला के पुंलिंग-स्त्रीलिंग शब्दों में पर्याप्त साम्य पाया जाता है। डेनमार्क के प्रसिद्ध भाषाशास्त्री श्री रास्क महोदय ने ठीक ही कहा है कि भाषाओं के साम्य और वैषम्य का आधार उनका व्याकरणिक गठन ही होता है, शब्द-भाण्डार नहीं। संसार की अनेक भाषाओं ने दूसरी भाषाओं से शब्द-भाण्डार लिया है, किन्तु उनका व्याकरणिक ढांचा अपना निजी रहा है।

(२) वचन-विधान—

हिन्दी में एक वचन और बहु वचन के रूप दो अवस्थाओं में पाये जाते हैं—(१) ऋजु अवस्था (२) तिर्यक् अवस्था। ऋजु अवस्था से तात्पर्य कारकीय परसर्ग रहित अवस्था और तिर्यक् अवस्था से तात्पर्य है कारकीय परसर्ग सहित अवस्था। हिन्दी में 'लड़का' और 'लड़के' एक वचनीय रूप हैं। 'लड़के' और 'लड़कों' बहु वचनीय रूप हैं। जैसे—लड़का किताब पढ़ता है। लड़के किताब पढ़ते हैं। यहाँ ऋजु अवस्था में 'लड़का' एकवचन और 'लड़के' बहुवचन है। इसकी तिर्यक् अवस्था इस प्रकार होगी। जैसे—'लड़के' ने किताब पढ़ी। 'लड़कों' ने किताब पढ़ी। परसर्ग-सहित होने के कारण ये रूप तिर्यक् अवस्था के सूचक हैं।

ऋजु अवस्था में वचन—

हिन्दी			बँगला		
एक व०	बहु व०	प्रत्यय	एक व०	बहु व०	प्रत्यय
घोड़ा	घोड़े	-ए	घोड़ा	घोड़ारा	-रा
लड़का	लड़के	-ए	छेले	छेलेरा	-रा
बालक्	बालक्	-०	बालक्	बालकेरा,	
		य्			
लड़की	लड़कियाँ	-इ△आँ		बालकरा	-रा
		यँ			
नारी	नारियाँ	-इ△आँ	मेये	मेयेरा	-रा
पुस्तक	पुस्तकें	-एँ	नारी	नारीरा	-रा
			बइ	बइगुलि,	-गुलि
				बइगुलो,	-गुलो
				बइसमूह	-समूह

तिर्यक् अवस्था में वचन—

हिन्दी		बँगला	
एक व०	बहु व०	एक व०	बहु व०
घोड़े का	घोड़ों का	घोड़ार	घोड़ादेर, घोड़ासमूह
लड़के का	लड़कों का	छेलेर	छेलेदेर, छेलेगण
बालक् का	बालकों का	बालकेर	बालकदेर
लड़की का	लड़कियों का	मेयेर	मेयेदेर
नारी का	नारियों का	नारीर	नारीदेर
पुस्तक का	पुस्तकों का	बइर	बइगुलि, बइसमूह

विशेष—उच्चरित रूपवाले व्यंजनान्त शब्दों का बहुवचन बँगला में -रा या

-एरा प्रत्यय के योग से बनता है। जैसे 'बालक' का बहुवचन 'बालकरा' या 'बालकेरा' होता है। सम्बन्धकारक के एकवचन में 'बालकेर' और बहु-वचन में 'बालकदेर'[1] बनता है।

हिन्दी और बँगला के कारकीय परसर्ग—

हिन्दी	बँगला
कर्त्ता—×, ने	×
(१) लड़की ने काम किया।	(१) मेये काज करल।
(२) लड़कियों ने काम किया।	(२) मेयेरा काज करल।
कर्म—को, से	के
(१) तू इस घोड़े को देख।	(१) तू एइ घोड़ाके देख।
(२) तू इन घोड़ों को देख।	(२) तू एइ घोड़ागुलिके देख।
करण—से, द्वारा	द्वारा, दिये
(१) वह छुरी से काटता है।	(१) ओ छुरि दिये काटे।
(२) वह छुरियों से काटता है।	(२) ओ छुरिगुलि दिये काटे।
संप्रदान - के लिए	जन्ये
(१) बुड्ढे के लिए।	(१) बुड़ोरजन्ये
(२) बुड्ढों के लिए।	(२) बुड़ोदेर जन्ये
(३) हवाबदल के लिए।	(३) हवाबदलेर जन्ये
अपादान—से	थेके
(१) घोड़े से गिरकर	(१) घोड़ा थेके पड़
(२) घोड़ों से गिरकर	(२) घोड़ागुलिथेके पड़े
सम्बन्ध—का, की, के	×
(१) देश का ऐक्य	(१) देशेर ऐक्य
(२) देशों का ऐक्य	(२) देशगुलिर ऐक्य

१. व्यंजनान्त या अकारान्त शब्द का एकवचनीय सम्बन्धकारक-एर प्रत्यय के योग से और अन्य स्वरान्त शब्दों का-र प्रत्यय के योग से बनता है।

Scanned with CamScanner

अधिकरण—में, पर	ते, मध्ये, ऊपरे
(१) हिन्दी में	(१) हिन्दी ते
(२) शहर में	(२) शहरे, शहरते
(३) घर पर, घर के ऊपर	(३) बाड़ी ऊपरे

हिन्दी और बँगला के विशेषण-विशेष्य—

हिन्दी में दो प्रकार के विशेषण पद पाये जाते हैं— (१) परिवर्तनशील विशेषण (२) अपरिवर्तनशील विशेषण।

'भला' परिवर्तनशील और 'लाल' अपरिवर्तनशील विशेषण है। जैसे—

(१) भला लड़का (२) भले लड़के
(३) भली लड़की (४) भली लड़कियाँ। } परिवर्तनशील

(१) लाल घोड़ा (२) लाल घोड़े।
(३) लाल घोड़ी (४) लाल घोड़ियाँ। } अपरिवर्तनशील[1]

किन्तु बँगला में विशेषण अपरिवर्तनशील ही पाये जाते हैं। लिंग-वचन के प्रभाव से वे मुक्त रहते हैं।

जैसे—

(१) भल छेले (२) भल छेलेरा।
(३) भल मेये (४) भल मेयेरा।

हिन्दी और बँगला के क्रियापद—

(१) पूर्वकालिक क्रिया—

हिन्दी	बँगला
देखकर=√देख्+कर	देखे=√देख्+-ए
खाकर=√खा+कर	खेये=√खेय्+-ए
देकर=√दे+कर	दिये=√दिय्+-ए
ब्रजभाषा और अवधी में—	बँगला में=देखे-√देख+-ए। (=देखकर)।
देखि=देख+-इ (=देखकर)।	

१. उच्चारण की स्थिति के व्यंजनान्त विशेषण हिन्दी में अपरिवर्तनशील पाये जाते हैं।

(२) वर्तमानकालिक क्रिया—

चलता या चलता हुआ—

चलता हुआ बालक— =√चल्+ता+हुआ	चलिते बालक — =√चल्+इते
चलते हुए बालक=√चल्+ते+हुए	चलिते बालकेरा=√चल्+इते
चलती गाड़ी=√चल्+ती	चलन्त गाड़ी =√चल्+-अन्त

(३) भूतकालिक क्रिया—

लिखा हुआ नाम— =√लिख्+आ+हुआ	लेखा नाम— =√लेख्+आ
लिखे हुए नाम =√लिख्+ए+हुए	लेखा नाम गुलो=√लेख्+आ

उपर्युक्त उदाहरणों से सिद्ध है कि हिन्दी के वर्तमानकालिक क्रियापद और भूतकालिक क्रियापद लिंग-वचन का प्रभाव मानते हैं। लेकिन बँगला के वर्तमान कालिक तथा भूतकालिक क्रियापद लिंग-वचन के प्रभाव से मुक्त हैं। वे सदा अक्षुण्ण रहते हैं।

हिन्दी और बँगला की कालसूचक क्रियाएँ—

वर्तमानकाल

उत्तम पुरुष—

(१) मैं चाय-पान नहीं करता हूँ	(१) आमि चा-पान करि ना।
(२) मैं सुख में हूँ।	(२) आमि सुखे आछि।

मध्यम पुरुष—

(१) तुम सुनती हो ?	(१) तुमि शुन छो ?
(२) आप ठीक समझते हैं।	(२) आपनि भल बुझेन।

अन्य पुरुष—

(१) सूत से कपड़ा तैयार होता है।	(१) सूतोथेके कापड़ तैरी हय।
(२) माता जी सबको पुकारती हैं।	(२) मा शबाइके डाकेन।
(३) वह किताब पढ़ता है।	(३) शे बइ पड़े।

भूतकाल

उत्तम पुरुष—

(१) मैंने जगह दी।	(१) आमि जायगा दिलाम।
(२) हमने पैसा दिया।	(२) आमरा पोइशा दिलाम।
(३) मैं अस्वस्थ था।	(३) आमि अशुस्थ छिलाम।

Scanned with CamScanner

मध्यम पुरुष—

(१) तू गया।	(१) तुइ गेलि।
(२) तुम गये।	(२) तुमि गेले।

अन्य पुरुष—

(१) राजा गया।	(१) राजा गेल।
(२) राजा गये।	(२) राजारा गेल।

बँगला अपने भूतकाल में भोजपुरी से मिलती-जुलती है। भोजपुरी में 'राजा गइल'—बँगला में 'राजा गेल' (=राजा गया)। ऐसा ही रूप मैथिली का है। बँगला में 'गेल' =मैथिली में 'गेल' (=गया, गये, गई)।

भविष्यत् काल

उत्तम पुरुष—

(१) मैं कार्य करूँगा।	(१) आमि कार्ज करिब (करब) ?
(२) हम कार्य करेंगे।	(२) आमरा कार्ज करिब (करब) ?

मध्यम पुरुष—

(१) तुम क्या करोगे ?	(१) तुमि की कारिबे ?
(२) आप क्या करेंगे ?	(२) आपनि की करिबेन[1] ?

अन्य पुरुष—

(१) लड़का मिलेगा।	(१) छेले मिलिबे।
(२) लड़की मिलेगी।	(२) मेये मिलिबे।
(३) लड़के मिलेंगे।	(३) छेलेरा मिलिबे।
(४) लड़कियाँ मिलेंगी।	(४) मेयेरा मिलिबे[2]।

(ख) हिन्दी और गुजराती

हिन्दी और गुजराती की ध्वनियाँ—

हिन्दी जहाँ कुरुप्रदेश की किसी अपभ्रंश से सम्बद्ध है, वहाँ गुजराती शौरसेनी तथा महाराष्ट्री अपभ्रंश की वंशजा है। गुजराती, राजस्थानी तथा ब्रजभाषा अपनी व्याकरणिक संरचना में कुछ साम्य-सा भी रखती हैं। अन्तर इतना है कि राजस्थानी और ब्रजभाषा में दो लिंग (स्त्रीलिंग और पुंलिंग) पाये जाते हैं,

१. 'करिवेन' आदरसूचक क्रियापद है।

२. बँगला के क्रियापद लिंग—वचन के प्रभाव से मुक्त हैं। आदरसूचक कर्ता के आने पर क्रिया पर प्रभाव पड़ता है।

लेकिन गुजराती में तीन लिंग अर्थात् स्त्रीलिंग, पुंलिंग और नपुंसकलिंग पाये जाते हैं। मूर्धन्य 'ळ' गुजराती की विशेषता है। यह मूर्धन्य 'ळ' जनपदीय खड़ी बोली, मराठी और द्रविड़ परिवार की दक्षिणी भाषाओं में भी पाया जाता है।

(१) जिस प्रकार शब्दान्त 'अ' हिन्दी में लिखा जाता है, किन्तु बोला नहीं जाता, वही स्थिति प्रायः गुजराती में भी है। जैसे—

हिन्दी		गुजराती	
लिखित	उच्चरित	लिखित	उच्चरित
ऊँट	ऊँट्	ऊंट	ऊट्
नस	नस्	नस	नस्

(२) हिन्दी की भाँति गुजराती में भी संयुक्त या गुच्छीय वर्ण का अंतिम 'अ' बोला जाता है। जैसे—

हिन्दी		गुजराती	
लिखित (ध्वनिग्रामीय)	उच्चरित (ध्वन्यात्मक)	लिखित (ध्वनिग्रामीय)	उच्चरित (ध्वन्यात्मक)
भाग्य	भाग्ग्य	भाग्य	भाग्य
विश्व	विश्श्व	विश्व	विश्व
रक्त	रक्क्त	रक्त	रक्त

(३) शब्द के मध्य में आनेवाली 'ए' ध्वनि बोलने में गुजराती में अर्द्ध विवृत 'ऍ' (एँ) हो जाती है। जैसे—

लिखित	उच्चरित
केम	कॅम (केँम)

(४) सूरत की गुजराती में हिन्दी 'स्' ध्वनि 'ह्' हो जाती है। जैसे—

हिन्दी	गुजराती
पैसा (पेँसा)	पैहा (पेँहा)
साथी	हाथी[1]

हिन्दी और गुजराती के शब्द और उनके अर्थ (वचनसूचक)—

हिन्दी में			गुजराती में		
एकव.	बहुव.	लिंग.	एकव०	बहुव०	लिंग
घोड़ा,	घोड़े,	(पुं०)	घोडो,	घोडा	(पुंलिंग)
घोड़ी,	घोड़ियाँ,	(स्त्री०)	घोडी,	घोडीओ	(स्त्रीलिंग)
धोबी,	धोबी	(पुं०)	धोबी,	धोबीओ	(पुंलिंग)

१. संस्कृत की स् ध्वनि जेन्द भाषा में 'ह्' हो गयी थी—सं० असुर > जेन्द अहुर। सं० सप्त > जेन्द हफ्त। सं० सोम > जेन्द होम। सं० सेना > जेन्द हेना।

Scanned with CamScanner

घोबिन,	धोबिनें,	(स्त्री.)	घोबण,	घोबणो,	(स्त्री०)
मोर,	मोर,	(पुं०)	मोर,	मोर,	(पुं०)
मोरनी,	मोरनियाँ	(स्त्री०)	ढेल,	ढेलो	(स्त्री०)
लड़का,	लड़के	(पुं०)	छोकरो,	छोकरा	(पुं०)
लड़की,	लड़कियाँ	(स्त्री०)	छोकरी,	छोकरीओ	(स्त्री०)
नोकरानी,	नोकरानियाँ	(स्त्री०)	नोकराणी,	नोकराणीओ	(स्त्री०)
कपड़ा,	कपड़े	(पुं०)	कपडुं,	कपडाँ	(नपुं०)
फोड़ा,	फोड़े	(पुं०)	गोमडुं,	गोमडाँ	(नपुं०)
दरिया (=नदी)		(स्त्री०)	दरिया	(=समुद्र)	
अच्छा		(पुं०)	सारो	(=अच्छा)	(पुं०)
अच्छी		(स्त्री०)	सारी	(=अच्छी)	(स्त्री०)
अच्छा		×	सारूं	(=अच्छा)	(नपुं०)

उपर्युक्त शब्द-सूची को दृष्टिपथ में रखते हुए कहा जा सकता है कि पुंलिंग शब्द हिन्दी में आकारान्त हैं तो गुजराती में ओकारान्त हैं। हिन्दी का आकारान्त पुलिंग शब्द ऋजु अवस्था की बहुवचनीय स्थिति में एकारान्त हो जाता है, लेकिन गुजराती में वह आकारान्त होता है। शब्द के धरातल पर हिन्दी और गुजराती पर्याप्त साम्य रखती हैं। हाँ, व्याकरणिक रूपों में उनमें अन्तर पाया जाता है। गुजराती पुंलिंग, एकवचनीय ऋजुरूप 'छोकरो' राजस्थान की मारवाड़ी के समान है। जैसे—गुज० छोकरो। मार० छोरो। गुज० बहुव० छोकरा। मार० छोरा। यह पाली—प्राकृत की परम्परा के रूप हैं। पाली—प्राकृत में प्रथमा में ये ही रूप बनते हैं—एकव० पुत्तो ; बहुव० पुत्ता। सं अः >प्रा० ओ। सं० आः >प्रा० आ। हेमचन्द के सिद्धहेमशब्दानुशासन के अपभ्रंशीय उदाहरणों में भी 'घोडो' (एकव०), 'घोडा' (बहुव०) रूप मिलते हैं।

हिन्दी और गुजराती की संज्ञाएँ और अवस्थाएँ—

ऋजु अवस्था—

पुंलिंग शब्द

हिन्दी			गुजराती		
एकवचन	बहुवचन	प्रत्यय	एकव०	बहु०	प्रत्यय
बालक	बालक	-०	बालक	बालक	-०
देव	देव	-०	देव	देव	-०
लड़का	लड़के	-ए	छोकरो	छोकरा	-आ
स्त्रीलिंगशब्द—					
देवी	देवियाँ	-आँ	देवी	देवीओ	-ओं

लड़की	लड़कियाँ	-आँ	छोकरी	छोकरीओ	-ओ
नोकरानी	नोकरानियाँ	-आँ	नोकराणी	नोकराणीओ	"
बाघिन्	बाघिनें	-एँ	बाघण्	बाघणो	"
बालिका	बालिकाएँ	-एँ	बालिका	बालिकाओ	"
गाय्	गायें	-एँ	गाय्	गायो	"
मोरनी	मोरनियाँ	-आँ	ढेल्	ढेलो	"

नपुंसक लिंग—

हिन्दी		गुजराती	
एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
×	×	कपडुं (=कपड़ा)	कपडाँ (=कपड़े)
×	×	टोलुं (=झुंड)	टोलाँ (=झुंड)
×	×	पाडुं (=कटड़ा)	पाडाँ (=कटड़े, भैंस के बच्चे)

साम्य—१. व्यंजनान्त पुंलिंग शब्द (उच्चारण की स्थिति में) हिन्दी और गुजराती के एकवचन और बहुवचन की ऋजु अवस्था में समान रहते हैं 'बालक्' और 'देव्' हिन्दी-गुजराती के एकवचन और बहुवचन में एक समान हैं।

१. स्त्रीलिंग शब्द एकवचन में दोनों भाषाओं में समान रहते हैं।

तिर्यक् अवस्था—

पुंलिंग शब्द—

हिन्दी			गुजराती		
एकव०	बहुव०	प्रत्यय	एकव०	बहुव०	प्रत्यय
देव्	देवों	-ओं	देव्	देवो	-ओ
लड़के	लड़कों	"	छोकरा	छोकराओ	"
धोबी	धोबियों	"	धोबी	धोबीओ	"
स्त्रीलिंग शब्द—			ढेल्	ढेलो	
खाट्	खाटों	-ओं	(=मोरनी)	(=मोरनियो)	-ओ
बालिका	बालिकाओं	"	बालिका	बालिकाओ	"
घोड़ी	घोड़ियों	"	घोडी	घोडीओ	"

१. गुजराती और मराठी में नपुंसकलिंग भी होता है। गुजराती के एकवचन में 'कपडुं' और बहुवचन में 'कपडाँ' और मराठी के एकव० में 'कापड' और बहुव० 'कापडें'।

Scanned with CamScanner

नपुंसकलिंग

हिन्दी			गुजराती		
एकव०	बहु०	प्रत्यय	एकव०	बहुव०	प्रत्यय
×	×	×	कपडा	कपडाओं	-ओं
×	×	×	नळिया	नळियाओं	"

साम्य—तिर्यक् अवस्था में पुंलिंग-स्त्रीलिंग एकवचनीय शब्द हिन्दी-गुजराती में समान हैं। बहुवचनीय तिर्यक् अवस्था में केवल अनुनासिकता का अन्तर रहता है। जैसे—

हि० देवों। गुज० देवो। हि० खाटों—गुज० खाटो।

हि० बालिकाओं। गुज० बालिकाओ। हि० भैंसों। गुज० ढेलो (=मोरनियों)

सारांश यह है कि हिन्दी के शब्दों में—'ओं' प्रत्यय और गुजराती के शब्दों में—'ओ' प्रत्यय का योग बहुवचन के तिर्यक् रूप का सूचक है। गुजराती के स्त्रीलिंग बहुवचनीय शब्द-रूप ऋजु और तिर्यक् अवस्था में एक-से रहते हैं। जैसे—ऋजु—छोकरीओ। तिर्यक्—छोकरीओ। पुंलिंग एकव० वाले शब्दों में प्राय: गुजराती, मारवाड़ी और ब्रजभाषा मिलती-जुलती है। जैसे—गुज० छोकरो। मार० छोरो। ब्रज० छोरो।

हिन्दी-गुजराती के कारकीय परसर्ग—

हिन्दी	गुजराती
कर्ता—×, ने	कर्ता—×
कर्म—को, से	कर्म—ने
करण—से, द्वारा	करण—थी, पासेथी
संप्रदान—के लिए	संप्रदान—माटे
अपादान—से	अपादान—थी
सम्बन्ध—का, के, की	सम्बन्ध—नो, ना, नी, नुं (नपुं०)
अधिकरण—में, पर	अधिकरण—मां, पर

हिन्दी और गुजराती के विशेषण-विशेष्य—

हिन्दी	गुजराती
(१) अच्छा लड़का, अच्छे लड़के (पुं०)	(१) सारो छोकरो, सारा छोकरा (पुं०)
(२) अच्छी लड़की, अच्छी लड़कियाँ (स्त्री०)	(२) सारी छोकरी, सारी छोकरियो (स्त्री०)
(३) अच्छा कपड़ा, अच्छे कपड़े (पुं०)	(३(सारुं कपडुं, सारां कपडां (नपुं०)

हिन्दी	गुजराती
(४) दुष्ट लड़का, दुष्ट लड़के (पुं०)	(४) दुष्ट छोकरो, दुष्ट छोकरा (पुँ०)
(५) लड़का अच्छा है।	(५) छोकरो सारो छे।
(६) लड़के अच्छे हैं।	(६) छोकरा सारा छे।
(७) लड़की अच्छी है।	(७) छोकरी सारी छे।
(८) लड़कियाँ अच्छी हैं।	(८) छोकरीयो सारी छे।
(९) कपड़ा अच्छा है।	(९) कपडुं सारुं छे।
(१०) कपड़े अच्छे हैं।	(१०) कपडां सारां छे।

उपर्युक्त उदाहरणों से सिद्ध है कि हिन्दी-गुजराती के उद्देश्यात्मक तथा विधेयात्मक विशेषण लगभग एक ही मार्ग का अनुसरण करते हैं। जो परिवर्तनशील विशेषण हैं, वे लिंग-वचन में विशेष्य के अनुसार आते हैं। अपरिवर्तनशील विशेषण अक्षुण्ण स्थिति में रहते हैं। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि गुजराती की बहुवचनीय संज्ञाओं-छोकरा, छोकरीयो, और कपडां के साथ क्रिया 'छे' ही आयी है और यही 'छे' एकवचनीय कर्तृपदों के भी साथ है।

हिन्दी और गुजराती की क्रियाएँ—

पूर्वकालिक कृदन्त—

हिन्दी	गुजराती
चढ़कर=√चढ़्+कर	चढ़ीने=√+चढ़ ईने
करके=√कर्+के	करीने=√कर्+ईने
हँसकर=√हँस्+कर	हसीने=√हस्+ईने

हिन्दी के पूर्वकालिक कृदन्तों की भाँति गुजराती के पूर्वकालिक कृदन्त भा लिंग-वचन के प्रभाव से मुक्त हैं।

वर्तमानकालिक कृदन्त—

हिन्दी	गुजराती
(१) पुं० एकव०—चढ़ता=√चढ़्+त्+आ	(१) पुं० एकव०—चढ़तो=√चढ़्+त्+ओ
(२) पुं०, बहुव०—चढ़ते=√चढ्+त्+ए	(२) पुं०, बहुव०—चढ़ता=√चढ़्+त्+आ
(३) स्त्री० एकव०—चढ़ती=√चढ्+त्+ई	(३) स्त्री०, एकव०—चढ़ती=√चढ़्+त्+ई
(४) स्त्री०, बहुव०—चढ़ती=√चढ़्+त्+ई	(४) स्त्री०, बहुव०,—चढ़ती=√चढ़्+त्+ई

Scanned with CamScanner

भूतकालिक कृदन्त—

(१) पुं०, एकव०—चढ़ा=√चढ़्+-आ	(१) पुं०, एकव० चढ़ो=√चढ़्+-ओ
(२) पुं०, बहुव०—चढ़े=√चढ़्+-ए	(२) पुं०, बहुव०—चढ़ा=√चढ़्+-आ
(३) स्त्री०, एकव०—चढ़ी=√चढ़्+-ई	(३) स्त्री०, एकव०—चढ़ी=√चढ़्+-ई
(४) स्त्री०, बहुव०—चढ़ी=√चढ़्+-ई	(४) स्त्री०, बहुव०—चढ़ी=√चढ़्+-ई

स्त्रीलिंग की स्थिति में हिन्दी और गुजराती के वर्तमानकालिक कृदन्त और भूतकालिक कृदन्त समान हैं। राजस्थान की मारवाड़ी में पूर्वकालिक कृदन्त कुछ-कुछ गुजराती के पूर्वकालिक कृदन्त से मिलता-जुलता है। जैसे गुज० हसीने=मार० हँसने (=हँसकर)। इस आँगन में मराठी भी कुछ देर तक गुजराती के पास बैठ लेता है। जैसे—मरा० करीन=गुज० करीने=मार० करने (=करके)।

हिन्दी और गुजराती की कालसूचक क्रियाएँ—

वर्तमान काल—

हिन्दी	गुजराती
(१) छोटा लड़का जाता है।	(१) नानो छोकरो जावे छे।
(२) छोटी लड़की जाती है।	(२) नानी छोकरी जावे छे।
(३) छोटी लड़कियाँ जाती हैं।	(३) नानी छोकरीयो जावे छे।

भूत काल—

(१) छोटा लड़का गया।	(१) नानो छोकरो गयो।
(२) छोटी लड़की गयी।	(२) नानी छोकरी गई।
(३) छोटे लड़के गये।	(३) नाना छोकरा गया।

भविष्यत् काल—

(१) छोटा लड़का जाएगा।	(१) नानो छोकरो जाशे।
(२) छोटी लड़की जाएगी।	(२) नानी छोकरी जाशे।
(३) छोटी लड़कियाँ जाएँगी।	(३) नानी छोकरीओ जाशे।

क्रियाओं में गुजराती से मारवाड़ी कुछ-कुछ मेल-सा खाती है। जैसे गुज० छोकरीओ जावे छे=मार० छोरियाँ जावै है। गुज० छोकरो जशे=मार० छोरो जासी। गुज० छोकरो आवा लाग्यो=मार० छोरा आवै लाग्यो। अतः दोनों मूलतः एकवंशजा हैं।

हिन्दी और गुजराती की संयुक्त क्रियाएँ

हिन्दी	गुजराती
(१) लड़का आने लगा।	(१) छोकरो आवा लाग्यो।
(२) लड़की आने लगी।	(२) छोकरी आवा लागी।
(३) लड़का छिप गया।	(३) छोकरो छपी गयो।
(४) लड़की छिप गयी।	(४) छोकरी छपी गई।
(५) लड़के छिप गये।	(५) छोकरा छपी गया।
(६) लड़कियाँ छिप गयीं।	(६) छोकरीओ छपी गई।

गुजराती की स्त्रीलिंग क्रियाएँ एकवचन और बहुवचन में समान रहती हैं, जब कि हिन्दी में परिवर्तित हो जाती हैं। मारवाड़ी बोली में भी सामान्य भविष्य, वर्तमान और भूत की स्त्रीलिंग क्रियाएँ एकवचन की भाँति ही बहुवचन में भी रहती हैं।

गुजराती की स्त्रीलिंग क्रियाएँ

एक वचन में	बहुवचन में
(१) छोकरी जावे छे।	(१) छोकरीओ जावे छे। (वर्तमान)
(२) छोकरी छपी गई।	(२) छोकरीओ छपी गई। (भूत)
(३) छोकरी जशे।	(३) छोकरीओ जशे। (भविष्यत्)

(ग) हिन्दी और मराठी

हिन्दी और मराठी की ध्वनियाँ—

हिन्दी में 'च्' ध्वनि तालव्य है किन्तु मराठी में 'च्' कठोर तालव्य और 'च़्' दन्तमूलीय है। ये दोनों दो पृथक्-पृथक् ध्वनिग्राम हैं जो अर्थभेदक हैं। जैसे—

हिन्दी	मराठी
चार्=एक गिन्ती	चार्=एक गिन्ती
	च़ार=घास
जग=दुनिया	जग =दुनिया
	ज़ग =जीवित रहो।

अतः मराठी में च्, च़्, ज्, ज़्, झ्, झ़् ध्वनियाँ पृथक्-पृथक् हैं, लेकिन मराठी लिपि में च़्, ज़्, झ़्, के लिए च्, ज्, झ् ही लिखा जाता है। वहाँ अलग से भिन्न चिह्न

Scanned with CamScanner

का प्रयोग नहीं होता। हिन्दी की 'ज़' ध्वनि दन्त्य संघर्षी है, जो मराठी की 'ज़' ध्वनि से भिन्न है।

(१) हिन्दी की भाँति मराठी शब्दों का अंतिम 'अ' लिपि में लिखा तो जाता है, किन्तु बोला नहीं जाता।

लिखितावस्था	उच्चरितावस्था
करीन[1]	करीन् (=करके)
फूल	फूल् (पुष्प)
तिकिट	तिकिट् (=टिकट)
आहेत	आहेत् (=हैं)

(२) हिन्दी की भाँति मराठी में भी गुच्छीय व्यंजन या संयुक्त व्यंजन का अंतिम 'अ' बोला जाता है।

हिन्दी		मराठी	
लिखितावस्था	—उच्चरितावस्था	लिखितावस्था	—उच्चरितावस्था
वरिष्ठ	—वरिष्ठ	वरिष्ठ	—वरिष्ठ
कर्म	—कर्म	उपमर्द	—उपमर्द (=अपमान)

(३) नासिक्य ध्वनि मराठी में लिखी तो जाती है, किन्तु बोली नहीं जाती। जैसे—

लिखितावस्था	उच्चरितावस्था
कांहीं	काही
नाहीं	नाही
देशांत	देशात्

(४) मराठी का मध्यवर्ती ईकार, ऊकार प्रायः इकार, उकार के रूप में बोला जाता है—

लिखितरूप	उच्चरितरूप
आधींच	आधिच्
तुटून	तुटुन्

(५) लिखितावस्था का एँकारान्त शब्द मराठी के उच्चारण में अकारान्त बोला जाता है—

लिखितरूप	उच्चरितरूप
खाणें, पिणें	खाण, पिण
घोसाळें	घोसाळ

1. मिलाइये—मराठी करीन = गुजराती करीने मारवाड़ी करने (=करके)।

हिन्दी और मराठी के समान शब्द और अर्थ—

हिन्दी	मराठी
अटक=रोक, अड़चन	अटक=गिरफ़्तारी
अपघात=आत्महत्या	अपघात=दुर्घटना
ऊन=भेड़ बकरी आदि के बाल	ऊन=गर्म
किताब=पुस्तक	किताब=खिताब, उपाधि
घाम=धूप, सूर्य-ताप	घाम=पसीना
तालीम=शिक्षा	तालीम=व्यायाम, कसरत
बाबा=पिता का पिता	बाबा=पिता
राग=प्रेम	राग=क्रोध
शिक्षा=तालीम, उपदेश	शिक्षा=दण्ड, सज़ा
संताप=मानसिक कष्ट	संताप=क्रोध
हाल=अवस्था, दशा	हाल=तकलीफ़, कष्ट

हिन्दी मराठी के लिंग-वचन—

हिन्दी			मराठी		
पुंलिग (ऋजु अवस्था)					
एकव०	बहुव०	प्रत्यय	एकव०	बहुव०	प्रत्यय
देव्	देव्	-०	देव्	देव्	-०
ऊँट्	ऊँट्	-०	उण्ट्	उण्ट्	-०
लड़का	लड़के	-ए	मुलगा	मुलगे	-ए
घोड़ा	घोड़े	-ए	घोडा	घोडे	-ए
कवि	कवि	-०	कवि	कवि	-०
धोबी	धोबी	-०	धोबी	धोबी	-०
पुंलिग (तिर्यक् अवस्था)—					
ऊँट्	ऊँटों	-ओं	उण्टा	उण्टां	-आं

Scanned with CamScanner

हिन्दी				मराठी	
घोड़े	घोड़ों	-ओं	घोड्या	घोड्यां[1]	-यां
कवि	कवियों	-ओं	कवी	कवीं	-ईं
धोबी	धोबियों	"	धोब्या	धोब्यां	-यां

उपर्युक्त विश्लेषण से सिद्ध है कि पुंलिग शब्द ऋजु अवस्था की एक वचनीय एवं बहुवचनीय स्थितियों में हिन्दी और मराठी में समान पद्धति का अनुसरण करते हैं। तिर्यक् अवस्था में भिन्नता पायी जाती है। जैसे—हिन्दी में—घोड़ा (एक व०), घोड़े (बहु व०)। मराठी में—घोडा (एक व०), घोडे (बहु व०)

स्त्रीलिंग (ऋजु अवस्था)—

हिन्दी			मराठी		
एकव०	बहुव०	प्रत्यय	एकव०	बहुव०	प्रत्यय
गाय्	गायें	-एँ	गाय्	गायी	-ई
भाषा	भाषाएँ	"	भाषा	भाषा	-०
घोड़ी	घोड़ियाँ	इ△य्आँ[2]	घोडी	घोड्या	-या
सासु	सासुएँ	-एँ	सासू	सास्वा	-वा

स्त्रीलिंग (तिर्यक अवस्था)—

घोड़ा	घोड़ियों	इ△य्ओं	घोडी	घोडियां[3]	-यां
रोटी	रोटियों	-ओं	पोळी	पोळियां	"
वस्तु	वस्तुओं	-ओं	वस्तू	वस्तू	-ऊ

नपुंसकलिंग (ऋजु अवस्था)—

हिन्दी			मराठी		
एकव०	बहुव०	प्रत्यय	एकव०	बहुव०	प्रत्यय
×	×	×	घर	घरें	-एँ
×	×	×	फूल	फुलें	"
×	×	×	सूत	सुतें	"

१. मिलाइये—तिर्यक् मराठी पुं० घोड्यां, स्त्री० घोडियां=पंजाबी पुं० घोड़ाँ, स्त्री० घोड़ीआँ=मारवाड़ी पुं०, घोड़ाँ, स्त्री० घोड़ियाँ। पुंलिग फ़ा० मर्द (एक व०); मर्दां (ब० व०)

२. 'घोड़ियाँ' में य् श्रुति है।

३. मिलाइए पंजाबी घोड़ीआँ। मारवाड़ी घोड़ियाँ।

नपुंसकलिंग (तिर्यक् अवस्था)—

×	×	×	घरा	घरां	-आं
×	×	×	फुला	फुलां	"
×	×	×	सुता	सुतां	"

विशेष—हिन्दी में ऋजु अवस्था में पुं० एकवचन 'घोड़ा' और पुं० बहुवचन 'घोड़े' होता है। स्त्री एक वचन 'घोड़ी' और स्त्री० बहुव० 'घोड़ियाँ' होता है। अतएव प्रातिपदिक 'घोड़्' माना जाएगा। विश्लेषण इस प्रकार संगत है—घोड़् + -आ = घोड़ा। घोड़् + ई = घोड़ी। घोड़् + -ए = घोड़े। घोड़् + -इ△य्आँ = घोड़ियाँ।

हिन्दी-मराठी के कारक—

हिन्दी	मराठी
कर्ता, करण—ने, द्वारा	नें, नी, पासून
चाकू से/द्वारा (एकवचन)	चाकूनें (=चाकू से)।
आंखों से (बहुवचन)	डोळ्यांनीं (=आंखों से)।
सूत से	सूतापासून (=सूत से)
भूदान से	भूदानानें (=भूदान से)
कर्म—को	ला, ना
नौकर, नौकर को (एक व.)	गडी, गड्याला
स्त्रियों को (बहुवचन)	स्त्रियाँना
संप्रदान—के लिये	साठीं
राज्य के लिए	राज्यासाठीं
अपादान—से	आंत+ऊन
घर से	घरांतून (=घर में से)
सम्बन्ध—का, की, के	चा, ची, चे, च्या, चीं, चें।
सोने का गहना (पुं०)	सोन्याचा दागिना। (पुं०)
आटे का चक्की (स्त्री०)	पिठाची गिरणी। (स्त्री०)
लोकनाट्य के प्रकार (पुं०)	लोकनाट्याचे प्रकार। (पुं०)
कमरे का किराया	खोलीचें भाड़े। (नपुं०)
विश्व के रहस्य	विश्वाचीं रहस्यें। (नपुं०)
शरीर के पोषण को	शरीराच्या पोषणाला[1]

१. विशेष—सम्बन्धकारकीय पद के पश्चात् आने वाला पद जब कारकीय परसर्ग सहित होता है तब सम्बन्ध कारकीय पद के साथवाले 'चा' के स्थान पर 'च्या' हो जाता है।

हिन्दी	मराठी
अधिकरण—में, पर	आंत, वर
शहर में	शहरांत
घर पर	घरावर
छुट्टी पर	रजेवर
हवा में	हवेंत
भाषा पर	भाषेवर

मराठी शब्द के अन्त में परसर्ग के योग से मूल शब्द में विकार होता है। मूल शब्द बहुवचन होने पर मराठी में परसर्ग बदल जाता है। जैसे हिं० कान से= मरा० कानातें। हिं० कानों से=मरा० कानांनीं।

हिन्दी-मराठी के विशेषण—

(१) अपरिवर्तनशील विशेषण—

हिन्दी एकव.	हिन्दी बहुव.	मराठी एकव.	मराठी बहुव.
लाल घोड़ा—	लाल घोड़े	लाल घोडा—	लाल घोडे[1]
लाल घोड़ी—	लाल घोड़ियाँ	लाल घोडी—	लाल घोड्या
× ×	× ×	लाल फूल—	लाल फुलें

(२) परिवर्तनशील विशेषण—

हिन्दी एकव.	हिन्दी बहुव.	मराठी एकव.	मराठी बहुव.
नीला घोड़ा—	नीले घोड़े	निळा घोडा—	निळे घोडे
नीली घोड़ी—	नीली घोड़ियाँ	निळी घोड़ी—	निळ्या घोड्या
× ×	× ×	निळें फूल—	निळीं फुलें

हिन्दी और मराठी के कृदन्त—

(१) पूर्व कालिक कृदन्त—

हिन्दी	मराठी
चढ़कर=√चढ़्+कर	चढ़ून=√चढ़्+-ऊन
करके=√कर्+के	करून=√कर्+-ऊन
जाकर=√जा+कर	जाऊन=√जा+-ऊन
आकर=√आ+कर	येऊन=√ये+-ऊन

१. पंजाबी में भी 'लाल घोड़े' रूप होता है। ऋजु अवस्था के ऐसे बहुवचनीय प्रयोगों में 'हिन्दी', 'मराठी' और 'पंजाबी' एक मार्ग पर चलती हैं।

(२) वर्तमान कालिक कृदन्त

हिन्दी	मराठी
आता=√आ+त्+आ	येत=√ये+त
आते=√आ+त्+ए	येत= ,, ,,
आती=√आ+त्+ई	येत= ,, ,,
बोलता=√बोल्+त्+आ	बोलत=√बोल्+अत
बोलती=√बोल्+त्+ई	बोलत= ,, ,,

(३) भूतकालिक कृदन्त

हिन्दी	मराठी
पड़ा=√पड़्+-आ	पडलेला=√पड्+ले+ल्+आ
पड़े= ,, +—ए	पडलेले= ,, +,, +,,+ए
पड़ी= ,, +—ई	पडलेली= ,, +,, +,,+ई

कृदन्त	संज्ञा		कृदन्त	संज्ञा	
पड़ा	लड़का	(पुं०)	पडलेला	मुलगा	(पुं०)
पड़े	लड़के	(पुं०)	पडलेले	मुलगे	(,,)
पड़ी	लड़की	(स्त्री०)	पडलेली	मुलगी	(स्त्री०)
पड़ी	लड़कियाँ	(स्त्री०)	पडलेल्या	मुली	(,,)
पड़ा	फूल	(पुं०)	पडलेलें	फूल	(नपुं०)
पड़े	फूल	(,,)	पडलेलीं	फुलें	(,,)

भूतकालिक कृदन्त के रूपों पर दृष्टि-पात करने पर विदित होता है कि हिन्दी की भाँति मराठा में भी भूतकालिक कृदन्त के रूप लिंग—वचन से प्रभावित रहते हैं। मराठी के नपुंसकलिंग में भी प्रभावपूर्ण परिवर्तन पाया जाता है।

हिन्दी-मराठी की कालसूचक क्रियाएँ—

वर्तमान काल—

हिन्दी	मराठी
लड़का आता है (पुं०, एकव०)	मुलगा येतो (पुं, एकव०)
लड़के आते हैं ('' ,बहुव०)	मुलगे येतात ('' ,बहुव०)
लड़की आती है (स्त्री०, एकव०)	मुलगी येते (स्त्री०, एकव०)
लड़कियाँ आती हैं ('' , बहुव०)	मुली येतात ('' ,बहुव०)
कपड़ा आता है।	कापड येतें (नपुं० ,एकव०)
कपड़े आते हैं।	कापडें येतात ('' ,बहुव०)

Scanned with CamScanner

यहाँ घोड़ा है। (पुं, एक व०)	इथेंघोडा आहे (पु०, एकव०)
यहाँ घोड़े हैं।(" बहुव०)	इथें घोडे आहेत (" ,बहुव०)

हिन्दी की भाँति मराठी के क्रियापद भी कर्ता के लिंग-वचन के अनुसार परिवर्तित होते हैं। हिन्दी में दो लिंगों (पुं० और स्त्री०) में और मराठी में तीन लिंगों (पुं,० स्त्री और नपुंसक) में परिवर्तन होता है। हिं० लड़का, लड़के=मरा० मुलगा, मुलगे।

भूतकाल—

हिन्दी	मराठी
लड़का गया (पुं,० एकव०)	मुलगा गेला (पुं०, एकव०)
लड़के गये (" ,बहुव०)	मुलगे गेले (", बहुव०)
लड़की गई (स्त्री०, एकव०)	मुलगी गेली (स्त्री०,)
लड़कियाँ गईं (" , बहुव०)	मुली गेल्या (" ,बहुव०)
कपड़ा गया (पुं० एकव०)	कापड़ गेलें (नपुं०, एकव०)
कपड़े गये (पुं० बहुव०)	कापडें गेलीं (नपुं बहुव०)

भविष्यत् काल—

हिन्दी	मराठी
लड़का आयेगा (पुं०, ")	मुलगा येईल (पुं,० एकव०)
लड़की आयेगी (स्त्री०, ")	मुलगी " (स्त्री० ")
लड़के आयेंगे (पुं०, बहुव०,)	मुलगे येतील (पुं०, बहुव० ")
लड़कियाँ आयेंगी (स्त्री०, ")	मुली " (स्त्री०, ")

मराठी की भविष्यत्कालीन क्रियाएँ वचन का प्रभाव तो मानती हैं, किन्तु लिंग का प्रभाव नहीं मानतीं।

कर्मवाच्य की क्रियाएँ—

हिन्दी	गुजराती	मराठी
(१) लड़के ने रोटी खाई।	(१) छोकराए रोटी खाई।	(१) मुलानी पोळी खाल्ली।
(२) लड़की ने रोटी खाई।	(२) छोकरीए ,, ,,	(२) मुलीनी ,, ,,।

(घ) हिन्दी और पंजाबी

हिन्दी और पंजाबी की ध्वनियाँ—

(१) हिन्दी की भाँति पंजाबी में भी प्रायः शब्दान्त 'अ' बोलने में लुप्त रहता है। जैसे—

हिन्दी			पंजाबी
लिखित रूप		उच्चरित रूप	लिखित रूप उच्चरित रूप
मकान	—	मकान्	मकान—मकान्
किताब	—	किताब्	किताब—किताब्
पाप	—	पाप्	पाप —पाप्

(२) पंजाबी में गुच्छ या संयोग के अन्तर्गत स्वरागम हो जाता है।

शब्द		पंजाबी-उच्चारण
स्कूल	—	सकूल्
लफ़्ज़	—	लफ़ज़्
प्रताप	—	परताप्
महेन्द्र	—	महेन्दर्

(३) कभी-कभी अगुच्छ को गुच्छ बनाकर बोला जाता है—

शब्द		पंजाबी-उचारण
सरदार	—	स्दार्
सवाल	—	स्वाल्

(४) शब्द के प्रारम्भ में यदि सघोष महाप्राण व्यंजन हो तो पंजाबी में उसके स्थान पर अघोष अल्पप्राण उच्चरित होता है; और साथ में हकार की अथवा तान हलकी ध्वनि भी सुनाई पड़ती है—

शब्द		पंजाबी-उच्चारण
घर	—	क्हर्[1] (कऽर्)
ढोल	—	ट्होल् (टोऽल्)
भाई	—	प्हाई (पाऽई)
भाभी	—	प्हाबी (पाऽबी)

१. पंजाबी का ध्वनिग्रामीय प्रतिलेखन 'घर' और ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन 'क्हर्' है। अन्य उदाहरणों को भी इसी तरह समझा जा सकता है। डा० सिद्धेश्वर वर्मा के मतानुसार पंजाबी के उच्चारण 'क्हर्'(=घर) आदि में अब 'ह' नष्ट होता जा रहा है और इसका स्थान तान (टोन) ने ले लिया है।

Scanned with CamScanner

हिन्दी-पंजाबी के शब्द और उनके लिंग—

हिन्दी			पंजाबी		
पुं०	स्त्री०	प्रत्यय	पुं०	स्त्री०	प्रत्यय
देव	देवी	-ई	देव	देवी	-ई
घोड़ा	घोड़ी	-"	घोड़ा	घोड़ी	-"
कुत्ता	कुतिया	-इया	कुत्ता	कुत्ती	-"
शेर	शेरनी	-नी	शेर	शेरणी	-णी
धोबी	धोबिन	-इन	धोबी	धोबण	-अण
नोकर	नौकरानी	-आनी	नोकर	नौकराणी	-आणी
भैंसा	भैंस	-०	भैंसा	भैंसी	-ई
भेड़ा	भेड़	-०	भेड़ा	भेड़ी	-ई
लड़का	लड़की	-ई	मुंडा	कुड़ी	-×

बहुत मामूली से अन्तर के साथ हिन्दी-पजाबी लिंग-विधान में समान हैं।

हिन्दी के कारकीय परसर्ग—ने, को, से, लिए, से, का, में।

पंजाबी के कारकीय परसर्ग—ने, नुँ, नाल, वास्ते, तों, दा, विच (विच्च्)।

हिन्दी-पंजाबी के वचन—

हिन्दी			पंजाबी		

ऋजु रूप—

पुंलिग—

एकव०	बहुव०	प्रत्यय	एकव०	बहुव०	प्रत्यय
मकान	मकान	-०	मकान	मकान	-०
लड़का	लड़के	-ए	मुंडा	मुंडे	-ए
धोबी	धोबी	-०	धोबी	धोबी	-०

विशेष—पुंलिग आकारान्त संज्ञा शब्द ऋजु अवस्था में हिन्दी, मराठी और पंजाबी में समान हैं। जैसे—हि० घोड़ा, घोड़े। मरा० घोडा, घोडे। पंजा घोड़ा, घोड़े।

स्त्रीलिंग—

लड़की—लड़कियाँ	-आँ	कुड़ी— कुड़ीआँ	-आँ
रानी —रानियाँ	-"	राणी— राणीआँ-	-"
मोटर—मोटरें	-एँ	मोटर— मोटराँ	-"

तिर्यक्रूप—

पुंलिग—

मकान—मकानों	-ओं	मकान—मकानाँ	-आँ
लड़के —लड़कों	-,,	मुंडे —मुंडाँ	-,,

स्त्रीलिग—

लड़की—लड़कियों	-,,	कुड़ी —कुड़ीआँ	-,,
मोटर —मोटरों	-,,	मोटर —मोटराँ	-,,

पंजाबी में व्यंजनान्त स्त्रीलिंग शब्द बहुवचन की ऋजु और तिर्यक् अवस्थाओं में समान अर्थात्-आँ प्रत्ययान्त होते हैं। जैसे—मोटर्—मोटराँ। यह फारसी प्रभाव है। पुं० एकव० फा० मर्द, बहुवचन मर्दां। स्त्री० एक वचन फा० ज़न, बहुवचन जनाँ।

हिन्दी-पंजाबी के विशेषण—

ऋजुरूप—

हिन्दी	पंजाबी
अच्छा लड़का देखता है।	चंगा मुंडा वेखदा है।
अच्छे लड़के देखते है।	चंगे मुंडे वेखदे हन।
अच्छी लड़की देखती है।	चंगी कुड़ी वेखदी है।
अच्छी लड़कियाँ देखती हैं।	चंगीआँ कुड़ीआँ वेखदीआँ हन।

तिर्यक् रूप—

अच्छे लड़के को देखो।	चंगे मुंडे नुँ वेखो।
अच्छे लड़कों को देखो।	चंगे मुंडाँ नुँ वेखो।
अच्छी लड़की को देखो।	चंगी कुड़ी नुँ वेखो।
अच्छी लड़कियों को देखो।	चंगीआँ कुड़ीयाँ नुँ वेखो।

पंजाबी के स्त्रीलिंग के सम्बन्धकारक में और बहुवचनीय संज्ञाओं में विशेष्य के अनुसार उनके विशेषण पद भी परिवर्तित होते हैं। पंजाबी की यह विशेषता ध्यान देने योग्य है। राम की लड़की=पंजा० राम दी कुड़ी। राम की लड़कियाँ=पंजा० राम दीआँ कुड़ीआँ। तिर्यक् बहु वचनीय संज्ञाओं में पंजाबी और मारवाड़ी कुछ-कुछ मेल खाती हैं। जैसे=पंजा० लोगाँ दी बहादुरी=मार० लोगाँ री बहादुरी। पंजा० कुड़ीआँ=मार० छोरियाँ। पंजा० मोटराँ=मार० मोटराँ (ऋजु और तिर्यक् में बहुवचनीय रूप।)

Scanned with CamScanner

हिन्दी-पंजाबी के कृदन्त—

हिन्दी		पंजाबी	
पूर्वकालिक—			
चढ़कर = √चढ़् + कर		चढके = √चढ् + के	
छोड़कर = √छोड़् + कर		छड्डके = √छड्ड् + के	
माँगकर = √माँग् + कर		मंगके = √मंग + के	
वर्तमानकालिक—			
कृदन्त	संज्ञा	कृदन्त	संज्ञा
आता हुआ	लड़का	आन्दाहुआ	मुंडा
आते हुए	लड़के	आन्देहुए	मुंडे
आती हुई	लड़की	आन्दीहुई	कुड़ी
आती हुई	लड़कियाँ	आन्दीहुईआँ	कुड़ीआँ[1]
भूतकालिक—			
आया हुआ	लड़का	आयाहुआ	मुंडा
आये हुए	लड़के	आयेहुए	मुंडे
आई हुई	लड़की	आईहुई	कुड़ी
आई हुई	लड़कियाँ	आईहुईआँ	कुड़ीआँ[2]

हिन्दी-पंजाबी की कालसूचक क्रियाएँ—

हिन्दी	पंजाबी
वर्तमान काल (कर्तृवाच्य)	वर्तमान काल (कर्तृवाच्य)
लड़का काम करता है।	मुंडा काम करदा है (ए)।
लड़के काम करते हैं।	मुंडे काम करदे हन।
लड़की काम करती है।	कुड़ी काम करदी है (ए)।
लड़कियाँ काम करती हैं।	कुड़ीआँ काम करदीआँ हन।
भूतकाल (कर्मवाच्य)	भूतकाल (कर्मवाच्य)
लड़के ने शाल जीता।	मुंडे ने शाल जिता।
लड़के ने ढाल जीती।	मुंडे ने ड्हाल (डाऽल्) जिती।
लड़के ने ढालें जीतीं।	मुंडे ने ड्हालाँ (डाऽलाँ) जितीआँ।

१. ये विशेषण-विशेष्य मार्के के हैं।

२. ये विशेषण-विशेष्य ध्यान देने योग्य हैं।

हिन्दी	पंजाबी
भविष्यत् काल कर्तृवाच्य	भविष्यत् काल कर्तृवाच्य
लड़का काम करेगा।	मुंडा कम्म करएगा।
लड़के काम करेंगे।	मुंडे कम्म करएगे।
लड़की काम करेगी।	कुड़ी कम्म करएगी।
लड़कियाँ काम करेंगी।	कुड़ीआँ कम्म करएगीआँ।

(ङ) हिन्दी और भारतीय द्रविड़ अधिभाषाएँ

संस्कृत के प्रभाव से तथा फारसी के प्रचलन से हिन्दी और द्रविड़ भाषाएं शब्दों के धरातल पर बहुत-कुछ निकट आई हैं। द्रविड़ भाषाओं में लगभग ६० प्रतिशत शब्द संस्कृत के मिलते हैं। इन शब्दों में बहुत से शब्द ऐसे हैं जिनमें अर्थ-परिवर्तन हो गया है। जैसे संस्कृत का 'कल्याण' शब्द हिन्दी में 'भलाई' के अर्थ में प्रचलित है; लेकिन यही 'कल्याण' तमिळ भाषा में 'विवाह' के अर्थ में है। 'मोती' के लिए तमिळ, तेलुगु, कन्नड़ और मलयाळम में क्रमशः मुत्तु, 'मुत्यमु', मुत्तु' और 'मुत्तु' शब्द हैं जो संस्कृत 'मौक्तिक' के विकसित रूप ही हैं। संस्कृत ने 'मीन' और 'नीर' द्रविड़ भाषा से लिये हैं।

ध्वनियाँ

द्रविड़ परिवार की तेलुगु आदि भाषाओं में ए) (ह्रस्व ए) तथा ए (दीर्घ ए) ध्वनियाँ पायी जाती हैं। वहाँ ये दोनों पृथक्-पृथक् ध्वनिग्राम हैं। ह्रस्व ए (ए)) और ह्रस्व ओ (ओ)) तेलुगु में खूब प्रचलित हैं। तेलुगु की 'ज़्' 'च़्' ध्वनियाँ दन्त्य हैं। मूर्धन्य 'ळ्', श्, ष्, तो द्रविड़ भाषा की ध्वनियों में पूर्णतया समाविष्ट ही है। दक्षिण की चारों द्रविड़ भाषाओं में तेलुगु में स्वरान्त की विशेषता है। यह गुण तमिळ, कन्नड़ और मलयाळम में नहीं। तेलुगु में शब्द के मध्य तथा अन्त में आने वाले स्वर का उच्चारण होता है।

Scanned with CamScanner

संस्कृत, हिन्दी और द्रविड़ भाषाओं की शब्दावली

संस्कृत	हिन्दी	तमिल	तेलुगु	कन्नड़	मलयालम
समय—					
वर्ष		वरुषम्	वर्षमु	वर्ष	वर्षम्
मास	मास	मासम्	मासमु	मास	मासम्
पक्ष	पाख	पक्षम्	पक्षमु	पक्ष	पक्षम्
दिवस	दिवस	दिवसम्	दिवसमु	दिवस	दिवसम्
रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
भोजनादि—					
पायस्	खीर	पायसम्	पायसमु	पायस	पायसम्
हिंगु	हींग	हिंगु	इंगुव	हिंगु	हिंगु
लवण	नोन	उप्पु	लवणमु	उप्पु	लवणम्
भोजन	भोजन	शाप्पाड	भोजनमु	भोजन	भोजनम्
भक्त	भात	सादम्	अन्नमु	भत्त	अन्नम्
द्राक्षा	दाख	दिराक्षइ	द्राक्ष	द्राक्षि	द्राक्ष[1]
मूली	मूली	मुळ्ळंगि	मुल्लंगि	मुळ्ळंगि	मुळ्ळंकि
मांस	मांस	मामिसम्	मांसमु	मांस	मांसम्
फल	फल	पषम्	फलमु	फल	फलम् (पळम्)
पुष्प	पुष्प	पू	पुष्पमु	पुष्प	पूवु (पुष्पम्)

१. मलयाळम में 'द्राक्ष' आदि का अंतिम अकार स्पष्टतः बोला जाता है।

संस्कृत	हिन्दी	तमिल	तेलुगु	कन्नड़	मलयालम
दाड़िम	अनार	मादुळइ	दानिम्मपंडु	दाळिंबे)	दाडिमफलम्(मातळम्)
धान्य	धान	ने)ल्	धान्यमु	अविक	धान्यम्
जीरक	जीरा	जीरकम्	जीरकमु	जीरक	जीरकम्
लवंग	लौंग	क्राम्बु	लवंगमु	लवंग	करियाम्पु
रत्न—					
मौक्तिक	मोती	मुत्तु	मुत्यमु	मुत्तु	मुत्तु)
वज्र	वज्र	वइरम्	वज्रमु	वज्र	वज्रम्
पारद	पारा	पादरसम्	पादरसमु	पादरस	रसम्
नील	नीला	नीलम्	नीलमु	नीलि	नीलम्
औज़ार—					
कर्तरी	कैंची	कत्तिरि	कत्ते)र	कत्तरि	कत्रिक (कत्तिरि)
सूची	सुई	ऊसि	सूदि	सूजि	सूचि[1]
पेशेवर—					
नापित	नाई	नावितन्	नापितुडु	नापित	क्षुरकन्
कुम्भकार	कुम्हार	कुयवन्	कुम्मरि	कुम्बार	कुमारन्
वैद्य	वैद्य	वैद्यन्[2]	वैद्युडु	वैद्य	वैद्यन्[3]
शरीर—					
देह	देह	देहम्	देहमु	देह	देहम्

१. संस्कृत के स्त्रीलिंग ईकारान्त शब्द प्रायः दक्षिण की द्रविड़ भाषाओं में इकारान्त हो जाते हैं। जैसे—सं० सूची = द्रविड़ भाषाएँ—'सूचि'।

२, ३. तमिळ और मलयाळम में अन् प्रत्ययान्त शब्द प्राणिवाची तथा पुंसूचक हैं।

Scanned with CamScanner

पाद	पाँव	पादम्	पादमु	पाद	पादम्
नख	नाखून	नकम्	नखमु	नख	नखम्
मुख	मुख	मुहम्	मुखमु	मुख	मुखम्
कर	कर	कयि	करमु	कइ	कय्यु), हस्तम्
रक्त	रक्त	रत्तम्	रक्तमु	रक्त	रक्तम्
घर—					
अंगण	आँगन	मुट्रम्	अंगणमु	अंगळ	अंकणम्
स्कंभ, स्तंभ	खम्भा	कम्बम्	स्तम्भमु	कम्ब	स्तम्भम्
जानवर —					
मीन	मीन	मीन्	मीनमु	मीनु	मीनु (मीन्)
मयूर	मोर	मयिल्	मयूरमु	मयूर	मयिल्
कोकिल	कोयल	कुयिल्	कोकिल	कोगिलें)	कुयिल्
सिंह	सिंह	सिंगम्	सिंहमु	सिंह	सिंहम्
काक	कउआ	काक्कइ	काकि	कागे)	काक्क
पशु	पशु	मृगम्	पशुवु	पशु	मृगम्
गौ	गाय	पशु	आवु	हसु	पशु
नक्षत्र—					
सूर्य	सूर्य	सूरियम्	सूर्युडु	सूर्य	सूर्यन्
चन्द्र	चन्द्र	चन्दिरन	चन्द्रुडु	चन्द्र	चन्द्रन्
नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्रम्	नक्षत्रमु	नक्षत्र	नक्षत्रम्

सम्बन्ध—					
अम्बा	अम्मा	अम्मा	अम्म	अम्म	अम्म, मातावु
मातुल	मामा	मामा	माम	मामा	मामन्
पौत्री	पोती	पेत्ति	पौत्रि	पौत्रि	पौत्रि
सपत्नी	सौत	सपत्नि	सविति	सवति	सपत्नि
रोग—					
पक्षाघात	पक्षाघात	पक्षवादम्	पक्षवातमु	पक्षवात	पक्षवातम्
वस्त्र—					
लिंगपट्ट	लंगोट	लंगोड़	लंगोट	लंगोटि	लंगोट्टि
धोतिका	धोती	आड़इ	धोवति	पंचे)	मुण्डु, धोत्ति
×	बनियान	बनियन्	बनियनु	बनियन	बनियन्
×	चोगा	चो)क्का	चो)क्काय	चो)क्का	चोक्कम्, अंकि
×	कमीज	कम्स	कमीजु	कमीज	कुप्पायम्, कम्मोसु
विविध—					
मनुष्य	मनुष्य	मनिदन्	मनुष्युडु	मनुष्य	मनुष्यन्
स्त्री	स्त्री	स्त्रि	स्त्रि	स्त्रि	स्त्रि
पुस्तक	पुस्तक	पुत्तकम्	पुस्तकमु	पुस्तक	पुस्तकम्
गमन	जाना	पो	पोवुट,	होगुवुदु	पौवुक

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त शब्द-तालिका सूचित करती है कि संस्कृत के शब्द द्रविड़ भाषाओं में या तो सीधे तत्सम रूप में व्यवहृत हुए हैं या कुछ परिवर्तन के साथ। तेलुगु, कन्नड और मलयाळम् में तो संस्कृत के तत्सम शब्द लगभग ६० प्रतिशत हैं। तमिळ में भी संस्कृत के तत्सम शब्दों की संख्या ४० प्रतिशत होगी। लगभग २० प्रतिशत तद्भव रूप में मिलते हैं। द्रविड़ भाषाओं में महत्वाची शब्द प्रायः अन् प्रत्ययान्त और अमहत्वाची-अम् प्रत्ययान्त होते हैं। जैसे सं० वैद्य=वैद्यन्। सं० पाद=पादम्। अमहत्वाची शब्द प्रायः अबोधसूचक माने जाने जाते हैं और नपुंसकलिंग के वर्ग में आते हैं। अबोधता के कारण कन्नड़ में बच्चे को 'मगु' कहते हैं। बोध हो जाने पर वह 'मगनु' (=पुत्र) और 'मगळु' (=पुत्री) कहा जाता है।

हिन्दी और द्रविड़-भाषाओं की संज्ञाएँ और कारक—

संस्कृत भाषा विभक्ति-प्रधान, हिन्दी भाषा विभक्ति-परसर्ग-प्रधान और द्रविड़ भाषाएँ प्रत्यय-प्रधान हैं। कारक और वचन की स्थितियों में इस कथन की स्पष्टता समाविष्ट है। जैसे—

संस्कृत		हिन्दी		द्रविड़ भाषाएँ	
अधिकरण कारक				(तमिळ)	
एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
नेत्रे	नेत्रेषु	नेत्र में	नेत्रों में	कणमेल	कणकळ्मेल
{नेत्र्+ए}	{नेत्र्+एषु}	{नेत्र्+०+में}	{नेत्र्+ओं+में}	{कण+मेल}	{कण+कळ्+मेल} बहुव०
अधिकरण, एकव०	अधिकरण, बहुव०	एकव०, अधि०	बहुव० परसर्ग अधि०		अधिकरण
					कण्णुकळिल्— कळ्+इल् बहुव०+अधिकरण

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि संस्कृत का 'एषु' प्रत्यय कारक और वचन दोनों को प्रकट करता है; किन्तु तमिळ भाषा का 'कळ्' प्रत्यय वचन को और 'मेल' कारक को बताता है। इसीलिए तमिळ प्रत्ययप्रधान भाषा कही जाती है। यह अन्तर ध्यान देने योग्य है।

हिन्दी	तमिलं	तेलुगु	कन्नड	मलयाळम
कर्ता—				
एक व०—आँख	कण	कन्नु	कण्णु	कण्णु, अक्षि
बहुव०—आँखें	कणकळ्	कन्नुलु	कण्णुकळु	कण्णुकल्, अक्षिकळ्
कर्म—				
एकव० आँख को	कण्णइ	कंटिनि	कण्णनु	कण्णिने)[1]
बहुव० आँखों को	कणकळइ	कन्नुलनु	कण्कळन्नु	कण्णुकळे)
करण—				
एकव० आँख से	कण्णिनाल्	कंटितो	कण्णुनिन्द	कण्णाल्
बहु व० आँखों से	कण्णकिनाल्	कन्नुलतो[2]	कण्णुकळिन्द	कण्णुकळाल्
संप्रदान—				
एकव० आँख के लिए	कण्णकाह्	कंटिकि	कण्णुकोस्कर	कण्णिनु
बहुव० आँखों के लिए	कणकवळकाह्	कन्नुलकु	कण्णुकळकोस्कर	कण्णुकळ्क्कु
अपादान—				
एकव० आँख से	कण्णिडमिरुन्द	कंटिनुंडि	कण्णनिन्द	कण्णिल्निन्नु
बहुव० आँखों से	कण्कळिडमिरुन्द	कन्नुलनुंडि	कण्णुकळनिन्द	कण्णुकळिल्निन्नु
सम्बन्ध—				
एकव० आँख का	कण्णुडय	कंटि	कण्णिन्	कण्णिन्डे
बहुव० आँखों का	कण्कळुडय	कन्नुल	कण्णुकळिन्	कण्णुकळुडे
अधिकरण—				
एकव० आँख में	कणमेल्	कण्टिलो	कण्णुमेल्	कण्णिल्
बहुव० आँखों में	कणकळमेल्, कण्णुकळिल्	कन्नुललो[3]	कण्णुकळुमेल्	कण्णुकळिल्

१. ऐसा ')' चिह्न स्वर की ह्रस्वता का सूचक है। २. मिलाइए—हिं० पुस्तक=तेलेगु पुस्तकमुळ। हिं० पुस्तकों—तेलुगु पुस्तकमुल। पुस्तकों से—पुस्तकमुलतो। पुस्तकें=पुस्तकमुल। ३. मिलाइए—हिं० पुस्तकें=तेलुगु० पुस्तकमुलु। हिं० पुस्तकों में—तेलुगु पुस्तकमुललो।

हिन्दी और द्रविड़ भाषाओं के विशेषण—

उद्देश्यात्मक विशेषण—

हिन्दी	तमिळ	तेलुगु	कन्नड	मलयाळम
अच्छा लड़का	नल्ल पइयन्	मंचि बालकुडु	बो)ल्ले) बालकनु	नल्ल आणकुट्टि
अच्छे लड़के	नल्ल पइयन्कळ्	मंचि बालकुलु	बो)ल्ले) बालकरु	,, आणकुट्टिकळ्[1]
अच्छी पुस्तक	नल्ल पुत्तकम्	मंचि पुस्तकमु	बो)ल्ले) पुस्तक	,, पुस्तकम्
अच्छी लड़की	नल्ल पे)ण्	मंचि बालिक	बो)ल्ले) बालकि	,, पे)णकुट्टि
अच्छी लड़कियाँ	नल्ल पेण्कळ	मंचि बालिकलु	"बालकियरु	,, पे) णकुट्टिकळ्
विधेयात्मक विशेषण—				
लड़का अच्छा है	पइयन् नल्लवन्	बालुडु मंचिवाडु	बालकनु वो)ल्ले) वनु	आणकुट्टिनल्लवन्
लड़की अच्छी है	पेण् नल्लवळ्	बालिक मंचिदि	बालकि वो) ल्लेवळु	पे) णकुट्टिनल्लवळ्
पुस्तक अच्छी है	पुत्तकम् नल्लुतु	पुस्तकमुमंचिदि	पुस्तकवो) ल्लेदु	पुस्तकम् नल्लतु
लड़के अच्छे हैं	पइयन्कळ नल्लवर	बालुरु मंचिवारु	बालकरुवो) ल्लेवरु	आणकुट्टिकळ् नल्लवर
लड़कियाँ अच्छी हैं	पेण्कळ नल्लवर्	बालिकलु मंचिवि	बालकियरु "	पे)णकुट्टिकळ्"
पुस्तकें अच्छी हैं	पुत्तकङ्कळ् नल्लवइ	पुस्तकमुलु मंचिवि	पुस्तकमळु वो)ल्लेव	पुस्तकङ्कळ्नल्लव[2]

१. तमिळ और मलयाळम में-कळ् प्रत्यय बहुवचन का सूचक है।
२. व्याकरणिक संरचना में तमिळ और मलयाळम मिलती-सी है।

द्रविड़ परिवार की भाषाओं में विधेयात्मक विशेषण अपने विशेष्य के अनुसार लिंग-वचन का प्रभाव स्वीकार करते हैं। द्रविड़ भाषाओं के विधेयात्मक विशेषणों में सार्वनामिक अंश प्रत्यय के रूप में जुड़ा रहता है। जैसे तेलुगु में 'वालुडु मंचिवाडु'। वाडु=वह।

हिन्दी और द्रविड़ परिवार की भाषाओं की क्रियाएँ—

हिन्दी—	(१) लड़का सड़क पर दौड़ता है।	(२) लड़के सड़क पर दौड़ते हैं।
तमिल—	(१) पइयन् रोड्डिल् वोडुगिरान्।	(२) पइयन्कळ् रोड्डिळ् वोडुगिरार्कळ
तेलुगु—	(१) बालुडु बाटपइ परुगिडन।	(२) बाल्रु बाटपइ परुगिडुदुरु।
कन्नड—	(१) बालकनु दारियल्लि ओडुत्ताने।	(२) बालुकरु दारियल्लि ओडुत्तारे।
मलायाळम—	(१) आण्कुट्टि रोडिल् ओडुन्नु।	(२) आण्कुट्टिकळ् रोडिल् ओडुन्नु।
हिन्दी—	(१) लड़की दौड़ती है।	(२) लड़कियाँ दौड़ती हैं।
तमिल—	(१) पे)ण्वोडुगिराळ्।	(२) पे) ण्कळ् वोडुगिरार्कळ्।
तेलुगु—	(१) बालिक परुगिडुनु।	(२) बालिकलु परुगिडुदुरु।
कन्नड—	(१) बालकि ओडुत्ताळे।	(२) बालकियरु ओडुत्ताळे।
मलयाळम—	(१) पे)ण्कुट्टि ओडुन्नु।	(२) पे) ण्कुट्टिकळ् ओडुन्नु।

उपर्युक्त तालिका से सिद्ध होता है कि द्रविड़ भाषाओं में मलयाळम भाषा की क्रियाएँ कर्त्ता के लिंग-वचन का प्रभाव नहीं मानतीं।

हिन्दी और द्रविड़ भाषाओं में पूर्वकालिक कृदन्त—

ब्रजभाषा की धातु में-इ प्रत्यय के योग से पूर्वकालिक कृदन्त बनता है। जैसे √जा+इ=जाइ (=जाकर)। यही प्रक्रिया तमिळ, तेलुगु, कन्नड और मलायाळम में भी पायी जाती है। तमिळ में—पोयि (=जाकर)=√पो+—इ[1]। तूंगि (=सोकर)=√तूंग्+इ; तेलुगु में; चदवि (=पढ़कर)=√चदव्+इ। तिनि=(खाकर)=√तिन्+इ; कन्नड में होगि (=जाकर)=√होग्+इ। मलयाळम में पोयि (=जाकर)=√पो+इ।

कर्त्ता-कर्म के लिंग-वचन और उनकी क्रियाएँ—

हिन्दी	तमिळ
(१) लड़के ने लड्डू खाया।	(१) पइयन् लड्डु साप्पिट्टान्।
(२) लड़के ने रोटी खायी।	(२) पइयन् रोट्टि साप्पिट्टान्।
(३) लड़की ने लड्डू खाया।	(३) पे) ण् लड्डु साप्पिट्टाळ्।
(४) लड़की ने रोटी खायी।	(४) पे)ण् रोट्टि ,, ।
(५) लड़कों ने रोटी खाया।	(५) पइयनकल् रोट्टि साप्पिट्टार्कळ्।

१. तमिल के पूर्वकालिक कृदन्त 'पोयि' (=जाकर) में प्रत्यय तो-इ ही है, किन्तु—इ से पूर्व य श्रुति का आगम हो जाता है। जैसे √पो+△(य)+इ=पोयि=हि० जाकर।

विशेष—हिन्दी में कर्त्ता कारक का परसर्ग 'ने' है, तमिळ में कर्त्ताकारक का कोई परसर्ग नहीं।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दी-वाक्यों की क्रियाएँ लिंग-वचन में कर्म के अनुसार हैं और तमिळ् वाक्यों की क्रियाएँ कर्त्ता के अनुसार हैं। 'पइयन्' कर्त्ता के साथ 'साप्पिट्टान्' और 'पे)ण्' कर्त्ता के साथ 'साप्पिट्टाक्' क्रिया आयी है। क्रियाओं के रूप बताते हैं कि सामान्य भूतकाल में हिन्दी की सकर्मक क्रियाएँ कर्मवाच्य में आती हैं और तमिळ् की कर्तृवाच्य में।

हिन्दी	तेलुगु
(१) लड़के ने रोटी खायी।	(१) बालुडु रोट्टे) तिने) नु।
(२) लड़की ने रोटा खायी।	(२) बालिक रोट्टे) तिने) नु।
(३) लड़कियों ने रोटी खायी।	(३) बालिकलु रोट्टे)तिने)रि।
(४) लड़का खाएगा।	(४) बालुडु तिनुनु।
(५) लड़की खाएगी।	(५) बालिक तिनुनु।
विशेष—हिन्दी में कर्त्ता कारक का परसर्ग 'ने' है।	विशेष—तेलुगु में कर्त्ता कारक का कोई परसर्ग नहीं।

भूतकाल में हिन्दी-क्रियाएँ कर्मवाच्य में और तेलुगु-क्रियाएँ कर्तृवाच्य में आयी हैं; किन्तु तेलुगु-क्रियाएँ लिंग का प्रभाव नहीं मानतीं। वचन का प्रभाव तो मानती हैं। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि प्राचीन तमिळ व्याकरण के अनुसार लिंगवर्ग में शब्द तीन प्रकार से विभक्त हैं—(१) मनुष्य अथवा देववाची शब्दों को महत् कहते हैं। (२) स्त्री अथवा महत्वाची का स्त्रीरूप महतीवाचक कहाता है। (३) निर्जीव तथा पशु-पक्षी आदि के सूचक शब्द अमहत् कहाते हैं। महती और अमहत् वाचक शब्दों के क्रिया शब्दरूप या विशेषण शब्द रूप समान होते हैं। जैसे—

(१) बालिक मंचिदि (=बालिका अच्छी है)। (महती)
(२) पुस्तकमु मंचिदि (=पुस्तक अच्छी है)। (अमहत्)
(१) आमे उन्नदि (=वह (स्त्री) है)। (महतीवाचक)।
(२) अदि " (=वह (निर्जीव वस्तु) है)। (अमहत्वाचक)।

हिन्दी	कन्नड
(१) लड़के ने रोटी खायी।	(१) बालक रोट्टे)[1] तिन्दनु।
(२) लड़की ने " " ।	(२) बालकि " तिन्दळु।
(३) लड़कियों ने " " ।	(३) बालकिकळु " तिन्दरु।
(४) लड़कों ने " " ।	(४) बालककळु " " ।
विशेष—हिन्दी में कर्ता कारक का परसर्ग 'ने' है।	विशेष—कन्नड में कर्ता कारक का कोई परसर्ग नहीं।

कन्नड की क्रियाएं लिंग-वचन में कर्त्ता के अनुसार परिवर्तित होती हैं। अतः ये कर्तृवाच्य की क्रियाएं हैं; किन्तु हिन्दी की क्रियाएं कर्मवाच्य की हैं। कन्नड की भूतकालीन तथा भविष्यत्कालीन कर्तृवाच्य क्रियाएं पुलिंग बहुवचन और स्त्रीलिंग बहुवचन में समान रहती हैं। पुं० बहुवचन 'तिन्दरु'। स्त्री० बहुव० 'तिन्दरु'। पु० बहुवचन 'माडुवरु' (=करेंगे)। स्त्री० बहुवचन 'माडुवरु' (—करेंगी) किन्तु एकवचन में क्रिया-भेद रहता है। जैसे—पुं० एकवचन 'माडुवनु' (करेगा)। स्त्री० एकवचन 'माडुवळु' (=करेगी)। लड़का भोजन करेगा—बालक ऊट माडुवनु। लड़की भोजन करेगी=बालकि ऊट माडुवळु।

हिन्दी	मलयाळम
(१) लड़के ने रोटी खायी।	(१) आणकुट्टिरोहि तिन्नु।
(२) लड़कों ने " " ।	(२) आणकुट्टिकळ् " " ।
(३) लड़की ने " " ।	(३) पेण्कुट्टि " " ।
(४) लड़कियों ने " " ।	(४) पेण्कुट्टिकळ् " " ।
(५) मैंने " " ।	(५) ञान् " " ।
(६) हमने " " ।	(६) ञङ्ङळ् " " ।
(७) तूने " " ।	(७) नी " " ।
(८) तुमने " " ।	(८) निङ्ङळ् " " ।
(९) उसने " " ।	(९) अवन् " " ।
(१०) उन्होंने " " ।	(१०) अवर् " " ।
(११) उसने (स्त्री) " " ।	(११) अवळ् " " ।
विशेष—हिन्दी में कर्ता कारक का परसर्ग 'ने' है।	विशेष—मलयाळम में कर्ता कारक का कोई परसर्ग नहीं।

मलयाळम के वाक्यों में कर्ता विभिन्न लिंगों, वचनों और पुरुषों में आते हैं

१. कर्मकारक में 'रो)ट्टिन्नु' भी आता है।

किन्तु सबके साथ क्रिया एक ही अर्थात् 'तिन्नु' है। मार्ग सीधा है। क्रिया की एकरूपतावाली सोधी पगडंडी पर चलने के कारण मलयाळम दक्षिण भारत की द्रविड़ भाषाओं में बहुत सुगम, सरल और त्वरित बोधगम्य है।

हिन्दी आर्यपरिवार की भाषा है और तमिळ, तेलुगु, कन्नड और मलयाळम द्रविड़ परिवार की भाषाएं हैं। हिन्दी का इनसे व्याकरणिक संरचना में कोई साम्य नहीं, पूर्णतया वैषम्य ही है। केवल प्रातिपदिकों में ही साम्य पाया जाता है। यहां यह भी स्मरण रखना चाहिए कि प्रातिपदिकों में साम्य वहीं है, जहां संस्कृत ने दोनों (हिन्दी तथा द्रविड़ भाषाओं) को अपनी शब्द-सम्पत्ति समान भाव से प्रदान की है। मलयाळम की मणिप्रवालम शैली की भाषा में तो संस्कृत के शत-प्रतिशत शब्द हैं। उनमें मलयाळम के प्रत्ययों का योग भर कर दिया जाता है।

Scanned with CamScanner